फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 74 संख्याः 96 प्रभात जयपुर, रविवार 5 नवम्बर, 2023 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 3.50 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

Reaping Benefits Amidst Mughal-Maratha battles

On 3 October 1692, Nathaniel succeeded Elihu Yale as the President of Madras. Meanwhile, during the same year, the Mughal army besieged the Marathas in the fortress of Gingee but was defeated in December

Safe and Healthy Wali Diwali

कौन है जादूगर और कौन किसे झांसे में रख रहा है?

-विशेष प्रतिनिधि द्वारा-

जयपुर, 4 नवम्बर। पर जहां तक चुनाव का मामला है, असल जादूगर राजस्थान की जनता ही है, जो व्यवहारिक है, केवल थ्योरिटिकली प्रतिपादित डैमोक्रेसी के सिद्धांत को ही कसौटी मानकर वोट नहीं देती। जनता जात-पात की सच्चाई को भी स्वीकार करती है, दलित के शोषण व अत्याचार से भी वाकिफ है। आर्थिक असमानता की मार को भी नज़दीकी से देखा है, उसने। धर्म के नाम पर पनपते अविश्वास, अन्याय, असुरक्षा की भावना से प्रेरित होकर भी जनता ने वोट दिया है।

जनता के "मूड" को समझने वाले एक पुराने जानकार ने रेवड़ियाँ बांटने की प्रथा की तुलना "काई" से की है, जो सदा से चुनाव से जुड़ी हुई है, जैसे पानी काई से। पहले चुनाव में भी रेवड़ियाँ बंटी थीं, पर लोटा, कम्बल और "पउए" तक सीमित थीं। फिर पैसा चलने लगा और आजादी की लड़ाई का उत्साह व पवित्रता की बातें पुरानी पड़ने लगीं, तो जात-पात, आर्थिक असमानता दूर करने की "फिलॉसफी" व प्रयास को, "यूनियनिज़्म" के नारे को स्वीकार सा किया राजस्थान की जनता ने, युग धर्म के अनुसरण में। पर, यह "फिलॉसफी" पूरी तरह हावी व निर्णायक साबित नहीं हुई राजस्थान में, जैसे तत्कालीन बंगाल, बिहार, बम्बई व देश के अन्य "औद्योगिक" क्षेत्रों में छायी। पर शिक्षकों और सरकारी कर्मचारियों के संगठनों को इस "फिलॉसफी" से काफी हद तक सफलता मिली जो आज भी असरदार है, कहीं बदले हुए स्वरूप में, कहीं-कहीं शुद्ध "एकैडमिक" सिद्धांत के फॉर्म में भी।

- **एक तरफ चतुर नेता गहलोत हैं जो मीडिया पर कंट्रोल और लोकलुभावन घोषणाओं की आड़ में जनता को झांसा दे रहे हैं।**
- **दूसरी तरफ हैं युवा ऊर्जावान नेता सचिन पायलट, जो पहले भी कांग्रेस पार्टी को गड्ढे में से निकालकर शिखर तक पहुंचा चुके हैं।**
- **हालांकि तब पायलट के साथ जो हुआ उसे आम जनता ने "धोखे" की संज्ञा दी और इसके लिए हर "एज ग्रुप" में पायलट के लिए सहानुभूति है।**
- **यह बात वे लोग भी समझ रहे हैं जो सत्ता के लालच में पायलट का साथ छोड़ गए थे और आज पायलट से गुहार कर रहे हैं कि, उनके क्षेत्र में एक सभा अवश्य कर दें।**

पर, यह भी सच है कि, इन क्षेत्रों में भी सफलता का कारण काफी हद तक राजस्थान की व्यवहारिता है। "प्रैक्टिकल पॉलिटिक्स" (व्यवहारिक राजनीति) की बात बार-बार इसलिये दोहराये जा रहा हूँ, क्योंकि उस दौर में लगभग सभी पार्टियों ने, चाहे वे "राइटिस्ट" सिद्धांतों में विश्वास रखने वाले राजनीतिक दल हों, जैसे स्वतंत्र पार्टी, चौधरी चरण सिंह जी का लोकदल (भारतीय क्रांति दल), जनसंघ (भाजपा का पुराना अवतार) या समाजवादी पार्टियों का जमघट, जैसे एस.एस.पी., पी.एस.पी. या मध्यमार्गी पार्टियां, जिनमें कांग्रेस भी शामिल थी, या पूर्णतया "लैफ्टिस्ट सोच" वाले वामपंथी दल, जैसे सी.पी.आई. व सी.पी.एम. सबने अपना-अपना श्रमिक संगठन खोल लिया, चाहे "यूनियनिज़्म" की फिलॉसफी इन पार्टियों के मूल सोच में "फिट" नहीं बैठती हो। तत्कालीन राजस्थान के एक वरिष्ठ पत्रकार ने कटाक्ष किया कि, लोकदल का चुनाव घोषणा पत्र तो शुद्ध वामपंथी पार्टियों के घोषणा पत्र व नारों से भी ज्यादा प्रगतिशील है।

एक जैसे नारों की भीड़भाड़ व व्यवहारिकता की प्रबलता के कारण, राजस्थान में कभी भी अप्रत्याशित नतीजे नहीं सामने आये, जो केवल स्थानीय मुद्दों पर आधारित हों। राष्ट्रीय मुद्दों की धीमी से धीमी प्रतिध्वनि जरूर आती रही है, जैसे आरक्षण, इंदिरा जी की हत्या, जनता पार्टी की 1977 की खिचड़ी सरकार, राम मंदिर का निर्माण, राजीव गांधी की हिंसक मृत्यु आदि। पर, फिर भी राजनीतिक व्यवहारिकता के कारण, आयाराम-गयाराम जैसी परम्परा भी राजस्थान में जोरों से नहीं उभरी।

इन राष्ट्रीय घटनाओं के कारण एक राजनीतिक करन्ट सा जरूर फैलता था और अगर उस करन्ट से कोई "प्रभावशाली" स्थानीय नेता जुड़ गया तो टिकाऊ सरकार जरूर बनती थी। अतः राजस्थान में सरकार कौन बनायेगा, स्पष्ट नहीं है। भाजपा ने तो कई नेताओं के मु.मंत्री के लिये नाम चला कर स्वयं "कंफ्यूज़न" फैला दिया।

कांग्रेस में पायलट के प्रति सहानुभूति काफी गहरी है। उनके साथ "धोखा" व अन्याय हुआ, यह भावना केवल यूथ में ही नहीं, लगभग सभी वर्गों में, "एज ग्रुप" में है। गहलोत की छवि चतुर चालाक राजनीतिज्ञ की है, जो राजनीतिक तिकड़म में माहिर हैं और जनता समझ नहीं पा रही कि, थके हारे, क्षेत्र में भ्रष्टाचार व गुरूर के लिये जाने-माने राजनीतिज्ञों को ही टिकट देने के लिये मु.मंत्री की जिद क्यों है, इस जिद के लिये जनता के मन में सहानुभूति होना तो दूर की बात है।

मीडिया पर कंट्रोल, जोड़-तोड़ में सिद्धहस्तता, जनता को अचम्भित तो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक सप्ताह पहले भाजपा जॉइन की और अब बागी

जोधपुर, 4 नवम्बर (कासं)। करीब एक सप्ताह पहले भाजपा में शामिल होने वाले जयनारायण व्यास

- **जयनारायण व्यास युनिवर्सिटी के पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष रविन्द्र सिंह भाटी ने भाजपा प्रत्याशी के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा की।**

विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष रविंद्र सिंह भाटी टिकट नहीं मिलने पर बागी हो गए हैं। भाटी ने निर्दलीय चुनाव

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा के यूनुस खान भी हुए बागी

डीडवाना, 4 नवम्बर (नि.सं.)। भाजपा की वसुंधरा राजे सरकार में दो बार मंत्री रहे यूनुस खान को इस बार भाजपा से टिकट नहीं मिला है। डीडवाना

- **भाजपा सरकार में दो बार मंत्री रहे यूनुस खान ने टिकट नहीं मिलने पर नाराजगी जताई और निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा की।**

से लगातार दो बार भाजपा के टिकट पर चुनाव जीत चुके यूनुस खान इस बात से सख्त नाराज हैं। अंततः उन्होंने पार्टी छोड़ने का फैसला किया है। उन्होंने कहा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'80 करोड़ गरीबों को 5 साल और मुफ्त राशन दिया जाएगा'

प्रधानमंत्री मोदी ने दुर्ग और रतलाम की चुनावी सभाओं में यह घोषणा की

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 नवम्बर। "रेवडी बांटने" (फ्रीबीज़) की संस्कृति पर चल रही बहस के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों से पूर्व 80 करोड़ गरीब लोगों के लिए फ्री राशन स्कीम की अवधि बढ़ाने की आज घोषणा की।

पिछले वर्ष के सितम्बर माह में इस स्कीम की अवधि समाप्त होने जा रही थी, लेकिन इसे तब दिसम्बर माह तक बढ़ा दिया गया। उसके बाद नैशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट के तहत स्कीम को दिसम्बर 2023, एक वर्ष तक के लिए बढ़ा दिया गया।

दुर्ग और रतलाम में चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहाकि खाद्यान्न स्कीम की अवधि पांच वर्षों के लिए बढ़ाने से गरीब लोगों को अपनी अन्य आवश्यकताओं पर फोकस करने में मदद मिलेगी। मोदी ने इस अवसर पर कांग्रेस की भर्त्सना करते हुए कहा कि "कांग्रेस ने गरीबों को धोखे के अलावा कुछ नहीं दिया। वह ना तो गरीबों का आदर करती है और ना ही उनकी दुःख-तकलीफें समझती है।"

- **सूत्रों का कहना है कि, यह घोषणा 5 राज्यों के विधानसभा चुनावों के मद्देनज़र की गई है।**
- **इस घोषणा के साथ एक बार फिर "रेवड़ी कल्चर" पर बहस छिड़ गई है। गत कुछ वर्षों में सभी दल "फ्रीबीज़" की घोषणा करते रहे हैं।**
- **भाजपा सांसद वरूण गांधी, जो रेवड़ी कल्चर के कड़े विरोधी हैं, ने कहा कि, इस तरह की घोषणाओं से आम नागरिक खुद को मुफ्त सुविधाएं पाने का हकदार समझने लगते हैं।**
- **नीति आयोग के सदस्य एवं कृषि अर्थशास्त्री रमेश चंद ने तो दिसम्बर 2022 में ही मुफ्त राशन देने की सुविधा बंद करने का सुझाव दिया था, कई अन्य अर्थशास्त्री तथा विशेषज्ञ भी ऐसे सुझाव देते रहे हैं।**
- **फ्री राशन की घोषणा कोविड काल में की गई थी, पर चुनावी फायदे के लिए केन्द्र में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार इसे लगातार आगे बढ़ाती रही है। ऐसी धारणा है कि, गत वर्ष यू.पी. चुनाव जीतने में इस योजना की बड़ी भूमिका थी।**

पिछले कुछ वर्षों से सभी राजनीतिक दल चुनावों के पहले फ्री

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस प्रत्याशियों की छठी लिस्ट घोषित

भरतपुर सीट आर.एल.डी. के लिए छोड़ी

नई दिल्ली, 4 अक्टूबर। देर रात कांग्रेस ने 23 सीटों पर प्रत्याशियों की छठी लिस्ट जारी की। केन्द्रीय चुनाव समिति की बैठक में नीचे दिए गए प्रत्याशियों के नामों पर मुहर लगाई गई। इस लिस्ट में भरतपुर की सीट राष्ट्रीय लोकदल के लिए छोड़ी गई है। इस प्रकार छठी लिस्ट में कांग्रेस के कुल 22 प्रत्याशी है।

	विधानसभा क्षेत्र	उम्मीदवार		विधानसभा क्षेत्र	उम्मीदवार
1	सांगरिया	अभिमन्यु पूनिया	13	भरतपुर	आर.एल.डी.के लिए छोड़ी
2	भादरा	अजीत बेनीवाल	14	मालपुरा	घासी लाल चौधरी
3	डूंगरगढ़	मंगलराम गोदारा	15	मेड़ता (एस.सी.)	शिवरतन वाल्मीकि
4	पिलानी (एस.सी.)	पीतराम काला	16	फलोदी	प्रकाश छंगानी
5	दांतारामगढ़	वीरेन्द्र सिंह	17	लोहावत	किशनाराम बिश्नोई
6	शाहपुरा	मनीष यादव	18	शेरगढ़	श्रीमती मीना कंवर
7	चौमूं	डॉ.शिखा मील बराला	19	सूरसागर	शहजाद खान
8	आमेर	प्रशांत शर्मा	20	आहोर	श्रीमती सरोज चौधरी
9	जमवारामगढ़ (एस.टी.)	गोपाल लाल मीणा	21	चोरासी (एस.सी.)	ताराचन्द्र भगोरा
10	हवामहल	आर.आर.तिवारी	22	भीलवाड़ा	ओम नारायनीवाल
11	विद्याधर नगर	सीताराम अग्रवाल	23	लाडपुरा	नईमुद्दीन गुड्डू
12	अलवर शहर	अजय अग्रवाल			

ADMISSION CLOSING SOON
B.A.-LL.B.
LL.B.
LL.M.
with CS/RJS
Helpline : +91-8696218218
BIYANI LAW COLLEGE (Co-Ed.)

ऑटोमेटिक कान की मशीनें 3500/- से शुरू
स्पीच थैरेपी
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
94602 07080

क्या कारण है कि, यूरोप में अचानक यहूदियों पर हमले होने लगे हैं

यह दौर यहूदियों को नाज़ी काल की याद दिला रहा है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 नवम्बर। इतिहास के एक घिनौने दोहराव के तहत वर्तमान में यूरोप में यहूदियों, यहूदी संस्थानों और यहां तक कि भाषा की पुस्तकों पर हिंसक हमले हो रहे हैं। इज़रायल और हमास के बीच युद्ध शुरू होने के बाद से अचानक ये हमले होना शुरू हुए हैं।

इनके विरोध में कुछ यहूदी और उनके समुदाय के नेता इन हमलों को रोकने के लिए सरकारों से अपील कर रहे हैं कि उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा दी जाए। यूरोपीय देश और अमेरिका हाल ही दिनों में भारत में स्वतंत्रता का माहौल खराब होने को लेकर उपदेश देते रहे हैं। उनके समर्थक देश धार्मिक स्वतंत्रता के मामले में भारत के फ्रीडम इण्डैक्स को यदा-कदा बिल्कुल नीचा दिखाते रहे हैं।

लेकिन विडम्बना यह है कि यूरोप और इतना ही नहीं ब्रिटेन भी यहूदियों और यहूदी संस्थानों के विरूद्ध वर्तमान में की जा रही बर्बरता और हमलों के साक्षी हैं। इनमें से कुछ हमले तो खुल्लम-खुला और दिन दहाड़े हुए हैं।

- **ब्रिटेन में बड़े पैमाने पर यहूदी विरोधी हिंसा (एंटी सैमिटिज़्म) देखी जा रही है, अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित यहूदी यूरोप छोड़कर अमेरिका जा रहे हैं।**
- **ऑस्ट्रिया की राजधानी विएना में एक यहूदी धर्मस्थल पर भारी तोड़ फोड़ की गई, धर्मग्रंथ जला दिए गए। यही नहीं, दीवार पर नाज़ीवाद का प्रतीक, "स्वास्तिक" का निशान बना दिया।**
- **यहूदी विरोधी हिंसा इज़रायल-हमास युद्ध के बाद तेजी से बढ़ी है।**

यूरोप में रह रहे यहूदी इससे भौंचक हैं और वे इस महाद्वीप में स्वयं के और अपने संस्थानों के लिए सुरक्षा प्रदान किए जाने की मांग कर रहे हैं। यूरोप के कई यहूदी सुरक्षा एवं संरक्षण को लेकर वर्तमान में अमेरिका प्रवास का विचार कर रहे हैं। लेकिन अमेरिका तक में भी यहूदियों के खिलाफ घृणा व हिंसा की कुछ घटनाएं हुई हैं।

और हां, यूरोप में यहूदी विरोधी व्यापक भावना में भारत खुले तौर पर प्रतीकात्मक रूप से शामिल हो रहा है, और इससे भी दुःखद यह है कि ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना स्थित यहूदियों के धर्मस्थल सायनागॉग पर हमला हुआ, हमलावर अपने पीछे यहूदियों के जले

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)